हज़रत सैय्यदना सैय्यद बदीयुद्दीन ज़िन्दा शाह मदार रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह

नोट - यह वजाहत किया जाता है कि हालांकि हज़रत सैय्यदना सैय्यद बदीयुद्दीन ज़िन्दा शाह मदार रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह की मज़ारे मुबारक मकनपुर शरीफ़ में मुरजए ख़लाइक़ ख़ासो आ़म है। लेकिन तज़किरा औलियाए जबलपुर में इसलिए आपके तज़किरा से शुरू किया जा रहा है कि सबसे पहले आप जबलपुर में तशरीफ़ लाए।हज़रत सैय्यद बदीयुद्दीन ज़िन्दा शाह मदार मकनपुरी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह वलीए ज़मां क़िदवाए कामिलां थे।

खा़नदानी पसमंज़र -: आप हा़शमी सादाते बनी फा़तिमा से हैं और नजीबुत तरफैन हसनी हुसैनी सैय्यद होने का शर्फ़ हासिल है।

वालिदे माजिद व वालिदा माजिदा -: आपके वालिदे माजिद का नाम सैय्यद अ़ली ह़ल्बी है, व वालिदा माजिदा का नाम सैय्यदा फा़तिमा सानी है।

विलादते बासआ़दत -: आपकी विलादत हलब शहर में 1 शव्वाल 242 हिज़री को सुबह सादिक़ ईद के दिन हुई।

नाम नामी व लक़ब -: आपका मशहूर नाम बदीयुद्दीन व लक़ब क़ुत्बुल मदार, ज़िंदा शाह मदार, दादा मदार मदारुल आ़लमीन वग़ैरह मशहूर है।

ताअ़लीम व तरबीयत -: आपकी उम्र जब 5 साल की हुई तो आपके वालिद बुज़ुर्गवार ने आपकी रस्मे बिस्मिल्लाह के बाद आपको हज़रत मौलाना हुजैफा शामी रहमतुल्लाह अ़लैह के सुपुर्द किया। आपकी ताअ़लीम मौलाना हुजैफा शामी

रहमतुल्लाह अ़लैह की निगरानी में शुरू हुई। आपने बहुत जल्द कुरआ़न शरीफ़ मुकम्मल किया। 12 साल की उम्र में आपने मुख़्तलिफ़ उ़लूम में अच्छी खा़सी इस्तेअ़दाद हासिल की। उसके बाद आपने तफ़्सीर, ह़दीस, फिक़्ह में कमाल हासिल किया और मुहद्दिस मशहूर हुए। इसके अलावा आपने इ़ल्मे कीमीया, सीमीया, रीमीया में भी दस्तगाह ह़ासिल की।

बैअ़त व ख़िलाफ़त -: उ़लूमे ज़ाहिरी सीख़ने के बाद आपने उ़लूमे बातिनी की तरफ रुख़ किया। आप हज़रत बायज़ीद बुस्तामी अलमारूफ तैफ़ूर शामी रहमतुल्लाह अ़लैह से बैअ़त हुए। आपके पीरो मुर्शिद ने आपको हबसे दम ताअ़लीम फ़रमाई और ख़िलाफ़त से नवाज़ा। आप हुक्म बजा लाए और इस क़दर हबसे दम किया कि खा़ने-पीने की ख़्वाहिश जाती रही।

ज़ियारत हरमैन शरीफैन -: मक्का मुअ़ज़्जमा पहुंचकर आपने हज का फरीज़ा अ़दा किया। कुछ दिन वहां क़ियाम करके मदीना मुनव्वरा हाज़िर हुए और दरबारे रिसालत में बातनी नेअ़मतों से मुस्तफ़ीज़ हुए।

फ़रमान -: एक दिन आप दरबारे रिसालत में हाज़िर थे, मुराक़िब हुए हाज़िरी नसीब हुई, सरवरे आ़लम स्वल्ल्ल-लाहू तआ़ला अ़लैहिवसल्लम ने आपसे फ़रमाया "बदीयुद्दीन तुम हिंदुस्तान जाओ और वहां जाकर मख़्लूक़ की हिदायत की कोशिश करो।"

हिंदुस्तान में आ़मद -: आप पहली बार जब हिंदुस्तान तशरीफ़ लाए तो गुजरात में कुछ अरसा क़ियाम फ़रमाया। गुजरात से रवाना होकर मुख़्तलिफ़ शहरों को जी़नत बख़्शी।

रवानगी:_ कुछ अरसा हिंदुस्तान के मुख़्तलिफ़ शहरों में रहकर आप मक्का मुअ़ज़्ज़मा चले गए, हज किया और फ़िर मदीना मुनव्वरा हाज़िर हुए। इसके बाद काज़मैन, बग़दाद, नजफे अशरफ़ होते हुए दुबारा हिंदुस्तान तशरीफ़ लाए और बग़दाद शरीफ में पीराने पीर हज़रत गौ़से आज़म दस्तगीर रह़मतुल्लाह तआ़ला अ़लैह से मुलाक़ात की। इस मर्तबा जो हिंदुस्तान तशरीफ़ लाए तो दीगर मुक़ामात की सैर की। फ़िर अजमेर शरीफ़ पहुंचे। अजमेर शरीफ़ में कोकिला पहाड़ी पर आपने क़ियाम फ़रमाया। ख़्वाजए ख़्वाजगां हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती रह़मतुल्लाह अ़लैह से आपकी मुलाक़ात हुई। अजमेर शरीफ़ से रवाना होकर दीगर मुक़ामात को शर्फ़ बख़्शा। हिंदुस्तान से आप तक़रीबन 7 बार ह़ज्जे बैतुल्लाह के लिए तशरीफ़ ले गए और हर बार आपने मुख़्तलिफ़ रास्ता इख़्तियार किया।

मकनपुर शरीफ़ में मुस्तक़िल क़ियाम -: हिंदुस्तान वापस तशरीफ़ लाकर आपने मकनपुर शरीफ़) कानपुर उत्तरप्रदेश (में मुस्तक़िल सुकूनत इख़्तियार की।

वसीयत -: आपने वसीयत फ़रमाई कि सैय्यद मुहम्मद अरग़ून, सैय्यद अबू तुराब फ़ंसूर, सैय्यद अबुल ह़सन तैफ़ूर को मैंने अपना जानशी़न किया, इन तीनों की बजाए मेरा तसव्वुर करना और जो कोई मुश्किल पेश आए तो उनकी तरफ़ रुजूअ करना।

आपकी दूसरी वसीयत -: मेरी नमाज़े जनाज़ा मौलाना हिसामुद्दीन सलामती रहमतुल्लाह अ़लैह पढ़ाएंगे।

विसाल -: आपने 17 जमादीयुल अव्वल 838 हिजरी विसाल फ़रमाया। मज़ार पुरअनवार मकनपुर शरीफ़ में वाकेए है।

सीरते पाक -: आपको मक़ामे समदीयत हासिल था। आपकी तावील उम्र हुई, आप खा़ने पीने की ख़्वाहिश से बेनियाज़ थे। आप हुज़ूर सरवरे आ़लम स्वल्ल्ल-लाहू तआ़ला अ़लैहिवसल्लम की रूहानियत से फैज़याफ़्ता थे। आप उवैसी थे।

आपके अक़्वाल -: आप फ़रमाते हैं अव्वल अपने आपको पहचानो ख़ुदा को पहचान लोगे।) मन अ़-र-फ़ नफ़्सुहु फक़द अ़-र-फ़ रब्बुह(। तुमको यह ख़्याल करना चाहिए कि तुम कौन हो कहां से आए हो कहां जाना है। इस आ़लम में किस लिए आए थे और ख़ुदावंद तआ़ला ने तुमको किस लिए पैदा किया है और नेक बख़्ती और बदबख़्ती क्या है।

कश्फ़ व करामत -: आपसे लातादाद करामातों का ज़हूर हुआ जिसमें यह क़ाबिले बयान हैं। एक रोज़ का वाक्या है कि आप एक दरिया के किनारे रौनक़ अफ़रोज़ थे, एक सौदागर अपना माल कश्ती में रख़कर रवाना हुआ। कुछ दूर जाकर वोह कश्ती दरिया में डूब गई। एक शख़्स ने जो वहां मौजूद था उस हादसे की ख़बर आपको दी। आपने एक मुट्ठी खा़क उसको दी और दरिया में डालने की ताक़ीद की। उसने वह मुट्ठी खा़क दरिया में डाली, कश्ती बरामद हो गई।

तकिया -: पुराने ज़माने में जब दर्सगाह मदरसा स्कूल कालेज वगैरह इल्मी इदारे नहीं होते थे तो इन्हीं मदारे पाक के सिलसिले के तकियों से हर तरह का इ़ल्म आ़वाम को दिया जाता, और हर तरह की दीनी व दुनियावी ज़रुरत को तकिए के ज़रिए ही पूरा किया जाता था।

शहरे जबलपुर में भी किसी ज़माने में बहुत सारे मदारी बुज़ुर्गों के तकिया हुआ करते थे, जिनमें से दौरे हाज़िर कुछ तकियों को कब्रिस्तान व मस्जिद में तब्दील कर दिया

गया है, और बहुत से तकियों में तकियादार बुज़ुर्गों की आल-औलाद आज भी शादो आबाद है, जिन तकियों के नाम माअ़लूम हुए उनमें से कुछ यह हैं|

1 रहीम शाह तकिया, बड़ी मदार टेकरी कब्रिस्तान।

2 **घुर्रो शाह तकिया बहोराबाग।**

3 **मिस्कीन शाह तकिया मस्जिद कोतवाली।**

4 गुलाब शाह तकिया मस्जिद ढलगर मुहल्ला।

5 शहीद शाह तकिया जामाअ़ मस्जिद सदर।

6 तकिया मुहल्ला बूचड़ी सदर।

7 मुजावर मुहल्ला तकिया गढ़ा।

8 तकिया मुहल्ला बघा तलाब गढ़ा बज़ार।

9 छोटा तकिया मुहल्ला गढ़ा बज़ार।

इसके अलावा बा'तहक़ीक़ दो तकिया और हैं लेकिन हम उनकी मज़ीद माअ़लूमात किन्हीं वुजूहात के चलते देने से कासिर हैं।

मदार चिल्ला -: हज़रत ज़िंदा शाह मदार जहां भी तशरीफ़ फ़रमां होते क़ियाम फ़रमा कर अल्लाह की इबादत करते उस जगह को आपके नाम से मंसूब कर दिया जाता। मदार चिल्ला, मदार टेकरी, मदारपुरा, मदार गेट, मदार स्टेशन, नूरपुर,

नूरगंज, शाहगंज, शाहबंदर, जमाल गंज, जमाल खेड़ा, पीरु मदारा, भेड़ा पीर वगैरह आपके नाम से मशहूर है।

जबलपुर में मदार पाक से मंसूब मुक़ामात

1) बड़ा मदार चिल्ला छल्ला ।

2) छोटा मदार चिल्ला छल्ला ।

3) बड़ी मदार टेकरी।

4) छोटी मदार टेकरी।

5) मंडी मदार टेकरी

6) मदार चौक कटंगी जबलपुर वग़ैरहुम।

आपने पूरी दुनिया की सैरो सियाहत फ़रमाई। जहां आज भी आपके निशानात मौजूद हैं उनमें से कुछ जगह यह हैं - ख़ुरासान, इराक़, ईरान, बग़दाद, करबला शरीफ़, नजफ़, इज़राईल, बैतुल मुक़द्दस, ताशक़ंद, समरकंद, रूस, बसरा, अफ़ग़ानिस्तान, इस्तांबुल, बर्मा, ताइवान, कंबोडिया, श्रीलंका, चाइना, जापान, मंगोलिया, मालदीप, तिब्बत, नेपाल, दमिश्क़, बुख़ारा, रोमानिया, पेरिस, स्पेन, फ़िनलैंड, स्वीडन, डेनमार्क, शिकागो, वॉशिंगटन, न्यूयॉर्क, क्यूबा, हबशा, नामीबिया, मॉरीशस, वगैरहुम अलबत्ता आपने तमाम दुनिया का सफ़रो क़ायाम कर चिल्ला क़शी की और तबलीग़े दीन करके इश्क़े मुस्तुफ़ा के फ़ूल बिख़ेरते रहे।

जबलपुर के चिल्ला शरीफ़

जबलपुर में आप तकरीबन 670 हिजरी से 700 हिजरी के दरमियान तशरीफ़ फरमां हुए और क़ियाम फ़रमां होकर इबादत में मशग़ूल हुए और लम्बे अरसे तक चिल्ला कशी की, इब्ने आदम आपसे मुताअस्सिर होकर कसीर ताअदाद में दाख़िले इस्लाम होकर आपके हल्क़े में शामिल हुए।

जबलपुर और उसके अतराफ़ में मौजूद मदार चिल्ले :

जबलपुर और उसके अतराफ़ में हज़रत ज़िंदा शाह मदार रहमतुल्लाह अलैह ने मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर चिल्ला कशी की, जहां से आज भी आपका फैज़ जारी व सारी है-

01) मदार चिल्ला बड़ी मदार टेकरी (रहीम शाह तकिया कब्रिस्तान जबलपुर)।

02) बड़ा मदार चिल्ला शास्त्री वार्ड जबलपुर।

03) मदार चिल्ला बैदरा मुहल्ला गढ़ा जबलपुर।

04) मदार चिल्ला रेल्वे क्रासिंग तहसील पनागर जबलपुर।

05) मदार चिल्ला तहसील पाटन जबलपुर।

06) मदार चिल्ला इन्द्राना तहसील मझोली जबलपुर।

07) मदार चिल्ला नया मुहल्ला तहसील सिहोरा जबलपुर।

08) मदार चिल्ला बी.टी.आई बरेला गांव, जबलपुर।

09) बा'तहक़ीक़ दो मदार चिल्ला शरीफ़ और हैं लेकिन किन्हीं वुजूहात की बिना पर हम उन मुक़ाम का नाम देने से क़ासिर हैं, जिसके लिए मुआ़फी के तलबगार हैं।

मदार पाक के खुलफा़

आपके ख़ुलफा़ओं की ताअ़दाद बेशुमार है जो अहाताए तहरीर से बाहर है। आपका फ़ैज़ान अलबत्ता तमाम सलासिले हक़्का में किसी न किसी तरह जारी वा सारी है। आपके कुछ मशहूर खुलफ़ा के नाम हसबे ज़ैल हैं।

हज़रत ख़्वाजा अरगून, हज़रत ख़्वाजा फ़ंसूर, हज़रत ख़्वाजा तैफ़ूर, हज़रत क़ाज़ी महमूद, हज़रत सैय्यद अजमल जौनपुरी, हज़रत क़ाज़ी मतहर क़ल्ला शेर, हज़रत काज़ी शहाबुद्दीन परकाला, हज़रत शेख़ हुसैन बल्खी, हज़रत जमालुद्दीन जानेमन जन्नती, हज़रत मौलाना हिसामुद्दीन सलामती, हज़रत अजमल बहराइची रहमतुल्लाह तआ़ला अ़लैहिम वग़ैरहुम।

जबलपुर शहर के सिलसिला ए आ़लिया मदारीया के ख़लीफ़ा

बाबा ए क़ौमो मिल्लत हज़रत हकीम सैय्यद वली शिकोह जाफ़री उ़ल मदारी मकनपुरी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ने अपनी किताब जमाले मदारीयत में मदारे पाक के ख़ुलफ़ाओं की फ़हरिस्त में इन तीन बुज़ुर्गों का नाम भी ज़िक्र किया जिनका ताअ़ल्लुक़ शहरे जबलपुर बिलवास्ता या बिलावास्ता है लेकिन मज़ार शरीफ़ कहां वाकए है यह इल्म में नहीं

|

1) हज़रत सैय्यद शाह ख़लीक़ुल्लाह मियां जबलपुर।

2) हज़रत सैय्यद शाह अह़मद अमीर मदारी जबलपुर।

3) हज़रत सैय्यद शाह नेअ़मतुल्लाह मियां जबलपुर।

हज़रत ख़िदमत अ़ली शाह अलमाअ़रूफ़ ख़जूर वाले बाबा

हज़रत सुल्तान ख़िदमत अ़ली शाह रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह सिलसिला ए आ़लिया मदारिया के मशहूर बुज़ुर्ग हज़रत क़ाज़ी मतहर क़ल्ला शेर रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के आशिक़ाने सोख़्ता शाही से तअ़ल्लुक़ रख़ते थे। आपको हज़रत सुल्तान जुमआ़ शाह मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के बाअ़द अज़ विसाल साहिबे सज्जादा नशीन मुक़र्रर किया गया।

आपको हज़रत खजूर वाले बाबा के नाम से मशहूरियत हासिल थी।

मज़ार शरीफ़- _ आपका मज़ार शरीफ़ रहीम शाह तकिया दादा मियां गेट से बड़ा मदार चिल्ला शरीफ़ की तरफ़ जाने वाले रास्ते में सीधे हाथ की तरफ़ वाकए है।

हज़रत सुल्तान शाह उर्फ़ गैबू शाह मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह

आप सिलसिला ए आ़लिया मदारीया के बहुत ही बाकमाल बुज़ुर्ग गुज़रे हैं, आपने अपनी ज़िन्दगी का अक्सरो बेश्तर हिस्सा जबलपुर की सरज़मीन पर बसर किया। हज़रत ग़ैबू शाह मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह हर लम्हा यादे इलाही में मशग़ूल रहते और इसी आ़लम में कई मर्तबा अ़वाम की नज़रों से ग़ायब हो जाते इसी

वजह से आपका लक़ब ग़ैबू शाह शोहराए वजाहत बना। आपको हज़रत ख़िदमत अ़ली शाह उर्फ़ ख़जूर वाले बाबा रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह से ख़िलाफ़त व इजाज़त हासिल थी।आपकी इ़बादतो रियाज़त का यह आ़लम रहता कि आप अपने जिस्म से आंतों को बाहर निकाल कर धोते साफ़ करते और धोने के बाद वापस अपने जिस्म के अंदर कर लेते। एक मर्तबा किसी ने आपको ऐसा करते देख़ लिया तो आपने अपनी आंतों को वहीं छोड़कर जबलपुर से बहुत दूर सुकूनत इख़्तियार करने के लिए जा निकले।

आपका मज़ार - जबलपुर रहीम शाह का तकिया मंडी मदार टेकरी कब्रिस्तान में आपकी आंतें मदफून हैं, आपकी अस्ल मज़ार शरीफ़ चैनपुर बाड़ी रायसेन मध्यप्रदेश में मुरजए ख़लाइक़ है।

हज़रत पीरा शाह मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह-

हज़रत सुल्तान शाह आलमारूफ ग़ैबू शाह रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के विसाल के बाद आप उनके साहिबे सज्जादा नशीन मुक़र्रर किए गए। आप बहुत सादगी पसंद वली सिफ़त बुज़ुर्ग थे। हर वक्त ज़िक्रे खुदावंद करते रहते व बंदगाने ख़ुदा की हर तरह से इम्दाद करते। हज़रत पीरा शाह मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह जबलपुर में मौजूद मदार चिल्लों का भी बहुत ख़याल व देख़-रेख़ करते बिलख़ुसूस मंडी मदार टेकरी चिल्ला का सारा इंतज़ाम आपके ही हाथ पर रहता।

मज़ार-: आपका मज़ारे पुर-अनवार मंडी मदार टेकरी हज़रत दादा मियां रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के मज़ार शरीफ़ के अहाता में मुरजए ख़लाइक़ है।

हज़रत ख़ैराती शाह मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह

हज़रत पीरा शाह मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के बाद अज़ विसाल हज़रत ख़ैराती शाह मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह को सिलसिला ए आ़लिया मदारीया की ख़िलाफ़त से नवाज़ा गया व साहिबे सज्जादा नशीन बनाया गया।

मज़ार शरीफ़- आपका मज़ार शरीफ़ मंडी मदार टेकरी रहीम शाह तकिया कब्रिस्तान, दादा मियां दरगाह के किनारे वाकए है।

हज़रत बैरागी शाह मदारी उर्फ़ जाफ़री वाले बाबा रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह

हज़रत बैरागी शाह रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह हज़रत ख़ैराती शाह रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के बाअ़द सिलसिला ए आ़लिया मदारीया सोख़्ता शाही के जानशीन मुक़र्रर किए गए।जाफ़री वाले बाबा के लक़ब से आपको मशहूरीयत हासिल हुई।

मज़ार शरीफ़- आपका मज़ार शरीफ़ रहीम शाह तकिया कब्रिस्तान गेट नं .1के कुएं से कुछ फ़ासले पर मुरजए ख़लाइक़। आपके मुअक्क़िदीन आपके फ़ैज़ान से मालामाल होते रहते हैं।

हज़रत सिद्क़ शाह अलमारूफ़ सिद्दीक़ शाह मलंग मदारी

रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह

हज़रत बैरागी शाह मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के बाअ़द हज़रत सिद्दीक़ शाह मलंग रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह को सिलसिला ए आ़लिया मदारिया सोख़्ता शाही का साहिबे सज्जादा नशीन बनाया गया।

आपका ताअ़ल्लुक़ गिरोहे मलंगान से था। आप साहिबे करामत बुज़ुर्गों में से हैं।

मज़ार शरीफ़- आपका मज़ार शरीफ़ मंडी मदार टेकरी रहीम शाह तकिया कब्रिस्तान, दादा मियां दरगाह के किनारे वाकए है। आपके सर के बालों को हज़रत मख़्दूम अनीसुर रहमान रहमतुल्लाहि तआ़ला की दरगाह के अहाते में मदफ़ून किया गया।

हज़रत गुलज़ार शाह अलमारूफ़ छोटू शाह मदारी

रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह

हज़रत सिद्दीक़ शाह मलंग रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के बाद आपको सिलसिला ए आ़लिया मदारिया सोख़्ता शाही का साहिबे सज्जादा नशीन बनाया गया।

मज़ार शरीफ़- आपका मज़ार शरीफ़ मंडी मदार टेकरी रहीम शाह तकिया कब्रिस्तान, मदार चिल्ला शरीफ़ की सिढ़ीयों के किनारे वाकए है।

हज़रत रहमत अ़ली शाह अलमारूफ़ नन्हई शाह मदारी

रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह

हज़रत गुलज़ार शाह उर्फ़ छोटू शाह मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के बाअ़द अज़ विसाल आपको सिलसिला ए आ़लिया मदारिया सोख़्ता शाही का साहिबे सज्जादा नशीन मुक़र्रर किया गया।

मज़ार शरीफ़- आपका मज़ार शरीफ़ दादा मियां दरगाह के क़रीब, मंडी मदार टेकरी रहीम शाह तकिया कब्रिस्तान जबलपुर में जाए मसकन है।

हज़रत बरक़त अ़ली शाह उर्फ़ रह़ीम शाह रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह

हज़रत रह़मत अ़ली शाह अलमारूफ़ नन्हई शाह मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के बाद अज़ विसाल आपको साहिबे सज्जादा नशीन मुक़र्रर किया गया।आपके वालिदे मोहतरम का नाम हज़रत माअ़सूम शाह था। आपको बज़ाफ़्ता तौर पर दरगाह ज़िंदा शाह मदार रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह मकनपुर शरीफ़ से भी हज़रत नन्हई शाह की सज्जादगी की सनद अ़ता की गई।आपके मुरीदीन व मुअ़क्क़िदीन का अच्छा ख़ासा हल्का था और उस वक़्त के नामी गिरामी हज़रात भी आपकी हल्काए बैअ़त में शामिल थे।आपका अक्सर वक़्त मदार चिल्ला शरीफ़ पर ही औराफ़ो वज़ाइफ़ करते हुए गुज़रता, रातों को जागकर मदार चिल्ला शरीफ़ में ही ज़िक्रे इलाही करते। कसीर ताअ़दाद में ह़जरते इंसान बयान करते हैं कि आपके ज़िक्रो अज़कार करने की आवाज़ कोसों दूर तक सुनाई देती थी।रहीम शाह तकिया मंडी मदार टेकरी कब्रिस्तान जबलपुर आपके नाम से ही वाकए है। जिसकी तमाम तफ़्सीलात बाबा कलीम शाह साहब के पास मौजूद हैं।

विसाल शरीफ़-: आपका विसाल शरीफ़ बरोज़े ईद 1 शव्वाल 1383 हिजरी मुताबिक़ 13 फ़रवरी 1964 ईस्वी को हुआ।

मज़ार शरीफ़ - आपका मज़ार शरीफ़, ख़ानक़ाहे आ़लिया मदारीया इमाम बाड़ा, मंडी मदार टेकरी रहीम शाह तकिया कब्रिस्तान जबलपुर में मौजूद है।

हज़रत हाफ़िज़ सलीम अ़ली शाह मलंग मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह

हज़रत हाफ़िज़ सलीम शाह मलंग रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह हज़रत रहीम शाह मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के साहबज़ादे थे। आपका भी शुमार गिरोहे

मलंगान में होता है। आप ह़ाफ़िज़े क़ुरआ़न थे। उस दौर के मशहूर हुफ़्फ़ाज़े किराम में आपका शुमार होता था। आपकी ज़बान बात करने व बोलने में लड़खड़ाती थी मगर जब क़ुरआन मजीद तिलावत करते तो हर लफ़्ज़ आपका बेहद साफ़ अ़दा होता। मदारी मलंग बनने में आपके वालिदे मुहतरम ने बज़ाते ख़ुद यकजूई के साथ शिरक़त दारी की।

तारीख़े विसाल -: आपका विसाल शरीफ़ वालिदे मोहतरम हज़रत रहीम शाह की हयाते तैय्यिबा में ही हो गया था। 26 रजबुल मुरज्जब 1371 हिजरी मुताबिक़ 21 अप्रैल 1952 ई .को आप इस दुनिया ए फ़ानी से कूच फ़रमा कर रब्बे क़ाइनात से जा मिले।

मज़ार शरीफ़- आपका मज़ार शरीफ़ दादा मियां दरगाह के क़रीब हज़रत ह़लीम शाह रहमतुल्लाहि तआ़ला के बाजू में, मंडी मदार टेकरी रहीम शाह तकिया कब्रिस्तान में जाए मसकन है।

हज़रत ह़लीम शाह मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह-

हज़रत रहीम शाह मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के रिह़लत फरमाने के बाद उनके फर्ज़न्द हज़रत ह़लीम शाह मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह को साहिबे सज्जादा नशीन मुक़र्रर किया गया।आप और आपके शिजरे के तमाम बुज़ुर्ग आशिक़ाने सोख़्ता शाही कहलाते हैं। हज़रत हलीम शाह मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ने मंडी मदार टेकरी में मौजूद मदार चिल्ला शरीफ़ को वसी करने में अहम क़िरदार अ़दा किया।इसके अ़लावा आपके ज़माने में पानी की बहुत तंगी होती थी, इसलिए आपने बज़ाते ख़ुद रहीम शाह तकिया कब्रिस्तान में अलग अलग जगह

मुन्तख़िब कर कुओं को ताअ़मीर किया और करवाया जिसमें से आज भी कुछ कुएं ज़ेरे इस्तेअ़माल हैं।आपके विसाल के बाद हज़रत बाबा क़लीम शाह अ़तीक़ी आशिक़ाने सोख़्ता शाही मदारी मद्दिज़िल्लहु आ़ली सज्जादा नशीन, गद्दी नशीन मुक़र्र किए गए। (मौजूदा सज्जादा नशीन)

तारीख़े विसाल -: क़मरी कलेंडर के हिसाब से 26 मुहर्रमुल हराम 1422 हिजरी व शम्सी कलेंडर के हिसाब से आपका विसाल 21 अप्रैल सन् 2001 ई .को हुआ।

हर साल आपका व आपके शिजराए मुबारिका के बुज़ुर्गों का उर्स शरीफ़ व गुलपोशी की रस्म 26 मुहर्रमुल हराम को मुनअ़क़िद होती है।

मज़ार शरीफ़- आपका मज़ार शरीफ़ दादा मियां दरगाह के क़रीब हज़रत सलीम शाह मलंग रहमतुल्लाहि तआ़ला के बाजू में, मंडी मदार टेकरी रहीम शाह तकिया कब्रिस्तान में ज़ाए मसकन है।

नोट – हज़रत ख़जूर वाले बाबा हज़रत हलीम शाह तक तमाम माअ़लूमात हज़रत बाबा मुहम्मद कलीम शाह सोख़्ता शाही मदारी साहब तकियादार ने अ़ता की।

हज़रत सूफ़ी अल्हाज मुंशी मीर क़ासिम अ़ली शाह शिकोही मदारी जबलपुरी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह

आप रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह हावीए शरीअ़त व तरीक़त गिरामीए मरतबत शैख़ुल अस्र हज़रत अ़ल्लामा मौलाना हकीम सैय्यद वली शिकोह जाफ़री उ़ल मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह सज्जादा नशीन ख़ानक़ाहे आ़लीया क़ुद्सीया

मदारीया मकनपुर शरीफ़ से बैअत थे। पीरे तरीक़त ने आपको सिलसिला ए आ़लिया शिकोहीया तब्क़ातीया मदारीया की ख़िलाफ़तो इजाज़त से मुस्त़फ़ीज़ किया।

ज़रिआ़ए मुआ़श -: आप जबलपुर के हाईकोर्ट में मुंशी के औहदे पर मुलाज़मत करते थे।

दीनी ख़िदमात -: आप रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ने ऑल इंडिया सुन्नी जमीअ़तुल मदार सुबाई शाख़ जबलपुर में सद्र की हैसीयत से मदारीया सिलसिले को ख़ूब फरोख़्त बख़्शा।आप रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ने बतौर नाशिर हज़रत सैय्यद वली शिकोह अलैहिर्रहमां की मशहूरो माअ़रुफ़ तसनीफ़ जमाले मदारीयत को किताब की शक्ल में सन् 1987 ईस्वी में इशाअ़त करवाया।आप हज़रत ज़िंदा शाह क़ुत्बुल मदार रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह से बहुत अक़ीदत रख़ते थे। आपको शहरे जबलपुर के मुख़्तलिफ़ मुक़ामात पर जश्ने मदारुल आ़लमीन की महफ़िल मुनअ़क़िद करवाने का शर्फ़ हासिल है।

विसाल -: आपका विसाल शरीफ़ बरोज़ इतवार 15 रजबुल मुरज्जब 1418 हिजरी मुताबिक 16 नवंबर 1997 ईस्वी को हुआ।

मज़ार शरीफ़-: हज़रत मुंशी मीर क़ासिम अ़ली शाह का मज़ार शरीफ़ दरबारे रब्बानी के क़रीब रहीम शाह तकिया क़ब्रिस्तान जबलपुर में वाकए है।

पीरे तरीक़त हज़रत सूफ़ी शाह अ़ब्दुल ह़ई 'अंजुम' शिकोही मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह

हज़रत सूफ़ी अ़ब्दुल ह़ई अंजुम रहमतुल्लाहि तआ़ला सरज़मीने जबलपुर के एक बेहद ख़ुश अख़्लाक़ औलीया अकाबिर में से थे।

रिहाईश–: आपने तिलक वार्ड छुट्टू मियां की तलैया ख़टीक मुह़ल्ला में रिहाईश इख़्तियार की जहां आज भी आपकी आल औलाद शादो आबाद है। आपका पूरा घराना दीनी व मज़हबी सोच समझ रख़ने वाला था।

वालिदे माजिद–: आपके वालिदे बुज़ुर्गवार का इस्मे गिरामी आ़ली जनाब मुहतरम अ़ब्दुल क़य्यूम था। आपके परदादा हुज़ूर हज़रत ख़ुदा बख़्श रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह भी अपने वक़्त के अकाबिर औलियाए किराम में से थे जिनका मज़ार शरीफ़ छुट्टू मियां तलैया मस्जिद के अंदर अहाते में वाकए है।

इ़ल्मी मुक़ाम–: हज़रत सूफ़ी ह़ई 'अंजुम' रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह को शाअ़री, उर्दू, अ़रबी, निज़ामत, तक़रीर, तअ़वीज़ात, नक़्शो-निगार कैलीग्राफी के साथ मुख़्तलिफ़ इ़ल्म व फ़न में ऊबूर हासिल था। आप बहुत इ़ल्म रख़ने वाले शख़्सीयत थे।

ज़रीआ़ए मुआ़श –: हज़रत ह़ई अंजुम नगर निगम जबलपुर डिपार्टमेंट के आ़ला अफ़सर की पोस्ट पर मुलाज़िम थे। यही आपका ज़रीआ़ए मुआ़श था।

आप रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह अख़्लाक़ के बेहद आ़ला मुक़ाम में फ़ाइज़ थे। इसी वजह से हर दीनो मज़हब मिल्लत के लोग आपसे बड़ी अक़ीदत अ़दबो अहतिराम के साथ मुलाक़ात करते।

बैअ़त व ख़िलाफ़त-: हज़रत सूफ़ी ह़ई अंजुम रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह हज़रत सैय्यद बदीयुद्दीन अहमद ज़िंदा शाह क़ुत्बुल मदार रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह की दरगाह शरीफ़ के साहिबे सज्जादा नशीन क़ुत्बे दौरां वलीए ज़मां ग़ौसुल वक़्त हकीम सैय्यद" वली "शिकोह जाफ़री उ़ल मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह से मुरीद थे। पीरो मुर्शिद ने आपको सिलसिला ए आ़लिया शिकोहीया तब्क़ातीया मदारीया की ख़िलाफ़तो इजाज़त से सरफ़राज़ फ़रमाया व ख़ूब नेक दुआ़ओं से नवाज़ा। मुर्शिदे बा-कमाल के तरीके की पैरवी करते हुए आपने कसीर ताअ़दाद में उम्मते मुस्लिमां को सिलसिला ए मदारीया के ह़ल्क़े में शामिल किया व सिलसिला ए आ़लिया मदारीया का हर तरह से दिफ़ाअ़ किया।

इसके अ़लावा आपके भाई मुहतरम **हज़रत सूफ़ी मौलाना सादिक़ुल क़ादरी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह** भी साहिबे ख़िलाफ़त थे और उन्हें कई सलासिले हक़्का की ख़िलाफ़तो इजाज़त हासिल थी व आपने बंगाली मस्जिद नया मुहल्ला जबलपुर में ख़तीब व पेश इमाम की हैसियत से तक़रीबन 25 साल ईमामत की।

दीनी ख़िदमात -: आपकी ख़ानक़ाह में हर तरह के जिस्मानी, रूहानी, जिन, असेब, बला वग़ैरह के मरीज़ आते। आपकी दुआ़ओं की बरक़त से अल्लाह तबारक व तआ़ला हर अमराज़ से शिफ़ा अ़ता फ़रमाता। हज़रत सूफ़ी ह़ई 'अंजुम' रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह फ़ने शाअ़री, वाअ़ज़ो नसीह़त के ज़रिए लोगों के दिलों में इशक़े रसूल व आले रसूल की शमां रौशन किया करते। आप शहीदे करबला नवासा ए

रसूल हज़रत सैय्यदना इमाम हुसैन इब्ने अ़ली रज़ीयल्लाहू तआ़ला अ़न्ह से बेइंतहा मुहब्बत करते जिसे शाअ़री के ज़रिए आपने ख़ूब आ़शिक़े इमामे हुसैन होने का इज़हार कर सबूत पेश किया। आपकी शाअ़री के यह अशआ़र क़ाबिले बयान है।

बला से सर कटे और कटके नेज़े पर चढ़े लेकिन

उसूलों पर गर आंच आ जाए तो परवाह नहीं करते।

मुसलसल चौदह सौ सदीयों से है यूं ऐलाने शब्बीरी

रसूले पाक के दुश्मन से समझौता नहीं करते।

सुबह़ान अल्लाह।।

विसाल-: हज़रत ह़ई 'अंजुम' रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह का विसाल शरीफ़ बरोज़ जुमआ़ 15 रजबुल मुरज्जब 1432 ईस्वी मुताबिक 17 जून 2011 ईस्वी को हुआ। आपके बाअ़द अज़ विसाल साहबज़ादे आ़लीजनाब शाहिद बाबा माअ़सूमी शिकोही मदारी वली अह़द व जानशीन मुक़र्रर हुए।

मज़ार शरीफ़ - हज़रत ह़ई अंजुम रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह का मज़ार शरीफ़, गद्दी वाले बाबा के चाहने वालों की मज़ार के बाएं जानिब, अपने भाई मुहतरम सादिक़ुल क़ादरी की क़ब्र शरीफ़ के बाजू में, रहीम शाह तकिया मंडी मदार टेकरी कब्रिस्तान जबलपुर में वाकए है।

हज़रत सूफ़ी बाबा रहमत अ़ली शाह शिकोही मदारी अबुल ख़ैराई जहांगीरी जबलपुरी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह

हज़रत सूफ़ी बाबा रहमत अ़ली शाह रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के आबा-ओ-अजदाद हस्वा फतेहपुर उत्तर प्रदेश से हिजरत करके तहसील पाटन जिला जबलपुर मध्यप्रदेश तशरीफ़ लाए।

विलादत- आपकी विलादते बासआ़दत तहसील पाटन में ही हुई। आपके वालिदे मोहतरम जनाब महबूब अ़ली शाह पाटन कचहरी में सरकारी मुलाज़िम थे और बहुत नेक इंसान थे। आपकी कमसनी में ही वालिदे मोहतरम का इस दुनिया ए फ़ानी से कूच हो गया जिन्हें घुर्रो शाह तकिया बहोराबाग कब्रिस्तान जबलपुर में मदफ़ून किया गया। वालिदे मोहतरम के विसाल के बाअ़द आपकी वालिदा मुहतरमा आ़मना बी ने आपकी परवरिश की ज़िम्मेदारी सरअंजाम दी।

जबलपुर की तरफ़ हिजरत- पाटन में फाक़ाकशी के आ़लम में मुब्तिला होने की वजह से हज़रत रहमत शाह बाबा की वालिदा मुहतरमा ने तमाम बच्चों को लेकर जबलपुर की तरफ़ हिजरत की।मुख़्तलिफ़ मुक़ामात का सफ़र तए कर हज़रत बाबा रहमत अ़ली शाह रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ने नया मुहल्ला जबलपुर में मुस्तक़िल सुकूनत इख़्तियार की व आपके भाई आ़लीजनाब शहादत अ़ली शाह की आ़ल औलाद ने लाल स्कूल हनुमानताल रोड की तरफ़ सुकूनत इख़्तियार की। जिनकी आ़ल से हम मुशाहिद अ़ली व मुदस्सिर अ़ली हैं।

बैअ़त व ख़िलाफ़त-: आपने अपने दौरे ज़मां के कई सारे बुज़ुर्गों से ज़ाहिरी व बातनी फ़ैज़ ह़ासिल किया। उनमें से कई बुज़ुर्ग हस्तीयों से आपको बैअ़त होने का शर्फ़ ह़ासिल हुआ जिनमें इन बुज़ुर्गों का इस्मे गिरामी सरे फ़हरिस्त है।

1) मजज़ूबे इलाही हज़रत बाबा मग्घे शाह रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह।

2) हज़रत अ़ली हसन अबुल उलाई जहांगीरी उर्फ़ मुंबई वाले हज़रत रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह , जिनकी ज़्यादा माअ़लूमात नहीं है, लेकिन बाबा साहब ने इनकी सोहबत में रहकर अरसाए दराज़ तक फ़ैज़ ह़ासिल किया।

3) हज़रत सूफ़ी बाबा सैय्यद वली शिकोह जाफ़री उ़ल मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह मकनपुर शरीफ़।

4) हज़रत मुल्ला जमालुद्दीन रामपुरी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह उत्तरप्रदेश।

मकनपुर शरीफ़ के बेहद मशहूरो माअ़रूफ़ बुज़ुर्ग पीरे तरीक़त रहबरे राहे शरीअ़त बाबा-ए-क़ौमो मिल्लत हज़रत हकीम बाबा सैय्यदना सैय्यद वली शिकोह जाफ़री उ़ल मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह से आपको बैअ़त होने का शर्फ़ ह़ासिल हुआ। पीरो मुर्शिद ने सिलसिला ए आ़लिया शिकोहीया तब्क़ातीया मदारीया की ख़िलाफ़त व इजाज़त से सरफ़राज़ से फ़रमाया। इसके अ़लावा आपको हज़रत अ़ली हसन अबुल ऊलाई रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह से सिलसिला ए अबुल उलाईया व दीगर सलासिल की इजाज़तो ख़िलाफ़त हासिल थी।

लक़ब- पीरे तरीक़त हज़रत नियाज़ अ़ली शाह रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ने एक दीनी महफ़िल में आपको ग़ियास अ़ली शाह का लक़ब अ़ता किया।

हज़रत बाबा रहमत अ़ली शाह को बेशुमार ज़िक्रो-अज़कार, औरादो-वज़ाइफ़, ज़नजीरे ज़ुबानी याद थे। हज़रत जामुन वाले बाबा) अजय फ्लावर के पीछे मिलौंनीगंज जबलपुर (की दरगाह शरीफ़ में आप बहुत इबादत व रियाज़त किया करते, इसके अ़लावा हिन्दुस्तान की बेशुमार मशहूरो माअ़रुफ़ दरगाहों मज़ारात पर आपने चिल्ला क़शी की व बुज़ुर्गों से ज़ाहिरी व बातिनी फ़ैज़ हासिल किया।आपका माअ़मूर था कि रोज़ाना आधी रात गुज़रने के बाअ़द चाहे कोई भी मौसम हो ठंडे पानी से वुज़ू करते। मुसल्ला बिछा कर ज़िक्रे ख़ुदावंद में मशग़ूल हो जाते।आप अपने वक़्त के बहुत बड़े आ़मिल भी थे और इस इ़ल्म के ज़रिए आपने कसीर ताअ़दाद में लोगों की परेशानीयां, तकालीफ़, जिन, असेब, बला वग़ैरह को दूर किया।

ज़रिआ़ए मुआ़श-: दुनियावी अख़रिजात को पूरा करने के लिए आपने आटा चक्की चलाने का शोबा इख़्तियार किया।

करामत -: आपने अपने विसाल के तक़रीबन एक हफ़्ते पहले ही अपने फ़रज़न्द जनाब अंसार अ़ली शाह साहब को इंतक़ाल की इत्तिला दे दी । गोया आपको अपने इंतक़ाल के बारे में पहले ही पता चल गया था।आपके पोते जनाब वाजिद अ़ली शाह इब्न नूर अ़ली शाह साहब बयान करते हैं कि - दादा मुहतरम की तबीयत आख़री अय्यामों ज़्यादा अ़लील रहने लगी जिसकी वजह से आज़ाए जिस्म में कई जगह ज़ख़्म हो गए। लेकिन जब उन्होंने दादा का जिस्म गुस्ल देते वक़्त देखा तो कोई ज़ख़्म मौजूद नहीं था।

आपके फ़रज़न्द आ़ली जनाब रियाज़ अ़ली शाह साहब बयान करते हैं कि एक बार बाबा हुज़ूर बहराइच शरीफ़ हज़रत सैय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह कि दरगाह शरीफ़ हाज़िरी देने गए। वहां मौजूद तालाब के पास से

आपका गुज़र हुआ तो देख़ा कि एक औरत वहां बैठे बेतहाशा रो रही है। आपने वजह तलब फ़रमाई तो उसने बताया कि मेरी एक बेशक़ीमती चीज़ तालाब में गिरकर गुम गई है इसी वजह से मैं रो रहीं हूं। आपने फ़रमाया अच्छा रुको ज़रा वुज़ू करके देख़ता हूं। जैसे ही आप वुज़ू से फ़ारिग़ हुए तो शहादत की उंगली तालाब की तरफ़ करते हुए ऊपर उठाने लगे जैसे जैसे आपकी उंगली ऊपर जाते जाती उस औरत की डूबी हुई चीज़ भी ऊपर आते जाती और इस तरह आपने उसे वह गुमी हुई चीज़ तालाब से निकाल कर लौटा दी। सुब्हान अल्लाह।।

विसाल व मज़ार शरीफ़ - बरोज़ पीर 19 रबीयुल अव्वल 1438 हिजरी मुताबिक 19 दिसंबर 2016 ईस्वी बवक़्ते ज़ौहर आपका विसाल हुआ। रहीम शाह तकिया मंडी मदार टेकरी कब्रिस्तान में आपको तदफ़ीनो तकफ़ीन किया गया। विसाल के वक़्त आपकी उम्र तक़रीबन 90 साल थी।

हज़रत ख़ादिम सूफ़ी बाबा मुख़्तार अ़ली शाह चिश्ती मदारी जबलपुरी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह-

हज़रत ख़ादिम सूफ़ी बाबा मुख़्तार अ़ली शाह रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह सिलसिला ए आ़लिया मदारीया के निहायत ही आ़ला मुक़ाम के बुज़ुर्ग शख़्सीयत गुज़रे हैं। आप अक्सरो बेश्तर हालते इबादतो रियाज़त औरादो वज़ाईफ़ के आ़लम में रहते। आपने मदार चिल्ला शरीफ़ व दीगर मुक़ामात पर चिल्लाकशी की व ज़ाहरी बातनी फ़ैज़ हासिल किया।

वालिदैन - आपके वालिदे मुहतरम का नाम आ़ली-जनाब हाजी रमज़ान शाह साहब था व वालिदा का नाम मुहतरमा आशा बी था।

विलादत-: आपकी विलादते बासआ़दत बरोज़ इतवार 01/02/1948 ईस्वी मुताबिक़ 20 रबीयुल अव्वल 1367 हिजरी को शहरे जबलपुर में हुई।

बैअ़तो ख़िलाफ़त -: हज़रत मुख़्तार बाबा रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ने सबसे पहले पीरे तरीक़त हज़रत सूफ़ी जलील शाह उर्फ़ मस्तान शाह सफ़वी चिश्ती रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह जबलपुर से बैअ़त हुए। हज़रत जलील मियां चिश्ती ने आपको सिलसिला ए चिश्तीया निज़ामीया सफ़वीया, क़ादरीया सोहरवर्दिया, नक़्शबंदीया व दीगर सलासिले हक़्का की ख़िलाफ़त व इजाज़त अ़ता फ़रमाई। हज़रत मुख़्तार शाह बाबा को राहे सुलूक़ व सूफ़ियाना ज़िंदगी में लाने में दादा पीर हज़रत हाफ़िज़ हनीफ़ शाह उर्फ़ नेअ़मतुल्लाह शाह इलाहाबादी जबलपुरी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ने भी बहुत अहम क़िरदार अ़दा किया।

लक़ब- चिश्तिया सिलसिला में आपको पीरो मुर्शिद की तरफ़ से **हिदायतुल्लाह शाह** लक़ब अ़ता किया गया।

इसके कुछ अरसे बाअ़द आपको हज़रत सैय्यदना सैय्यद शफ़ीउल हसन जाअ़फ़री मदारी सुम्मा मकनपुरी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह से शहरे भोपाल में बैअ़ते तालिब होने का शर्फ़ हासिल हुआ, मुर्शिदे बरहक़ ने आपको सिलसिला ए आ़लिया तब्क़ातिया त़ईफ़ूरीया मदारीया की ख़िलाफ़तो इजाज़त व ख़िरक़ए मुहब्बत के तौर पर अपना कुर्ता अ़ता फ़रमाया। इसके आ़लावा मकनपुर शरीफ़ के दीगर सादाते किराम भी आपसे बेहदो इंतिहा मुहब्बत व अ़क़ीदत रख़ते थे।

मदार चिल्ला शरीफ़ में आ़मद-: आपके बड़े भाई मुहतरम जो मदार चिल्ला शरीफ़ के ख़ादिम थे। उनके विसाल के बाअ़द आपने मदार चिल्ला शरीफ़ रहीम शाह तकिया

कब्रिस्तान में सन् 2004 से 2021 तक कमोबेश 17 साल बतौरे ख़ादिम ख़िदमात अंजाम दी।

आपके पास बहुत से बुज़ुर्गाने दीन व नेक सिफ़त हज़रात मिलने के लिए आते रहते थे। मजज़ूबे इलाही हज़रत क़ासिम बाबा रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह, हज़रत क़ारी अब्दुल हक रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह पेश इमाम जामाअ़ मस्जिद मंडी मदार टेकरी, हज़रत सूफ़ी मस्तान शाह मदारी बाबा इटारसी मद्दे ज़िल्लहु आ़ली वग़ैरहुम ने आपके घर आकर मुलाक़ात की।

मुरीदीन व ख़लीफ़ा-: आप रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के शहरे जबलपुर, शहरे भोपाल व दीगर सूबों के बहुत सारे लोगों को अपने हल्कए बैअ़त में शामिल किया। इसके आ़लावा बहुत से हज़रात को ख़िलाफ़तो इजाज़त से मुस्तफ़ीज़ किया। आपके जिन ख़लीफ़ाओं के नाम माअ़लूम हुए वोह यह हैं। इनके आ़लावा और ख़लीफ़ा हो सकते हैं-

साहिबज़ादा मुहतरम हज़रत हाफ़िज़ मुईनुद्दीन शाह इब्न मुख़्तार शाह साहब मद्दे ज़िल्लहु आ़ली, अन्ना फारूक़ की गली हड्डी गोदाम जबलपुर। आपके मुताबिक़ बाबा हुज़ूर ने आपको ज़बानी तौर पर ख़िलाफ़त अ़ता फ़रमाई।

हज़रत सूफ़ी बाबू शाह चिश्ती मदारी उर्फ़ मुहिब्बुल्लाह शाह न्यू आनंद नगर कालोनी अधारताल जबलपुर।

हज़रत सूफ़ी हकीम मौलाना मुहम्मद अख़्तरुल क़ादरी मदारी उर्फ़ शाह सैफ़ुल्लाह रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह। न्यू आनंद नगर कालोनी अधारताल जबलपुर।

हज़रत सूफ़ी अ़ब्दुल नफ़ीस 'शेरु' अलमाअ़रुफ़ ऐनुल्लाह शाह चिश्ती मदारी वारसी मद्दिज़िल्लहु आ़ली कटनी म.प्र।

हज़रत सूफ़ी मुहम्मद सईद मुल्ला जी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह मझौली गांव जिला जबलपुर ।

हज़रत सूफ़ी मुर्तुज़ा हुसैन शाह कलकत्ता।

हज़रत हाफ़िज़ बदरुद्दीन साहब भोपाल।

इसके अ़लावा आपके एक या दो ख़लीफ़ा और थे भोपाल में।

ख़िदमात -: आप रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ख़िदमते ख़ल्क़ में बहुत बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते बिलख़ुसूस नौजवानों की ताअ़लीम व उनको इल्मे दीनो दुनिया सीख़ने सीख़ाने की तरग़ीब दिलाते। आप मुस्लिम शाह बिरादरी मध्यप्रदेश के फाउंडेशन मेम्बर व सरपरस्ते आ़ला में से थे।

करामत -: आपके साहबज़ादे मुहतरम हाफ़िज़ मुईनुद्दीन शाह साहब, भतीजी मुहतरमा व दीगर हज़रात बयान करते हैं कि कई मर्तबा मुख़्तार बाबा साहब एक वक़्त में एक से ज़ाईद मुक़ामात पर देख़े जाते थे।

~ आप अपने घर के जिस कमरे में ईबादत किया करते थे उसमें कई रुहानी मख़्लूक़ात ज़ाहिरी व बातनी तौर पर हाज़िर होती थीं, जिनका आपके अहलो अयाल व दीगर बुज़ुर्गों ने भी दीदार किया।

~ आपने अपने अ़मल व ताअ़वीज़ात के ज़रिए कसीर ताअ़दाद में लोगों को शिफ़ायाबी अ़ता किए। आपके पास क़ुर्बो ज्वार दूर दराज़ तक से लोग आते थे।

~ आपने बहुत से ख़ुलफ़ा, मुरीदीन व मुतवस्सिलीन को अ़मल व दीगर विर्दो वज़ाइफ़ की इजाज़त अ़ता की और उन सब हज़रात ने उस अ़मल विर्दो वज़ाइफ़ चाशनी को चख़ा और उसका फ़ायदा महसूस किया।

~ आप ख़्वाब में आकर भी बहुत से लोगों की परेशानीयां दूर कर दिया करते थे।

~ एक बार का वाकिया है कि एक साहिब से कोई अ़मल करते हुए बिगड़ गया। उनको किसी महफ़िल में कुछ पीने को दिया तो पीते ही बेहोश हो गए। बहुत कोशिशों के बाअ़द भी उनको होश नहीं आया हत्ता के लोगों को गुमान होने लगा की रुह परवाज़ कर गई। महफ़िल में उन साहब के पीरो मुर्शिद, हज़रत मुख़्तार बाबा व हज़रत मुल्ला जमालुद्दीन शाह जबलपुरी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह जैसी आ़ला शख़्सीयत भी मौजूद थी। उन साहब के पीरो मुर्शिद ने हज़रत मुख़्तार बाबा से इरशाद फ़रमाया कि बाबा ज़रा देख़ना तो क्या हुआ। मुख़्तार बाबा उन साहब के पास गए और एक गिलास पानी में दम करके उनको पिला दिया। बाबा के दम किए हुए पानी को पीते ही उन्हें होश आ गया। सुब्हान अल्लाह।।।

विसाल - लम्बी अ़लालत के बाअ़द बरोज़ इतवार 12 जमादीयुल आख़िर 1443 हिजरी मुताबिक 16 जनवरी 2022 ईस्वी बवक़्ते असर तक़रीबन 4:45 मिनट को आपकी रूह इस दुनिया ए फ़ानी से परवाज़ कर गई और अपने हक़ीक़ी रब से जा मिली। आपकी नमाज़े जनाज़ा हज़रत अ़ल्लामा मौलाना अकबर अ़ली शाह मिस्बाही सैफ़ी जबलपुरी मद्दिज़िल्लहु आ़ली ने अ़दा कराई।

मज़ार - आपको रहीम शाह तकिया कब्रिस्तान के मदार चिल्ला शरीफ़ की सीढ़ीयों के किनारे मदफ़ून किया गया।

हज़रत मिस्कीन अ़ली शाह मलंग मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह

कोतवाली बाज़ार जबलपुर

हज़रत मिस्कीन अ़ली शाह मलंग मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह का शुमार शहरे जबलपुर के सबसे क़दीम औ़लीया अल्लाह में होता है। आप अपने वक़्त के निहायत ही जलवागर बुज़ुर्ग हस्ती थे।

वालिदे मुहतरम - हज़रत मिस्कीन शाह मलंग के वालिदे मुहतरम का इस्मे गिरामी आ़ली जनाब कल्लन शाह है।

वतन- आप रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह शहरे कोहाट बलूचिस्तान मौजूदा मुल्क पाकिस्तान के रहने वाले थे। बलूचिस्तान में भी आपके मुअ़त्तिक़ीदीन का अच्छा ख़ासा हल्क़ाह था।

सिलसिला -: हज़रत मिस्कीन शाह मलंग रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह हिंदुस्तान के सबसे मशहूर तबे त़बाई़न बुज़ुर्ग हज़रत सरकार सैय्यिद बदीयुद्दीन ज़िंदा शाह क़ुत्बुल मदार मकनपुर शरीफ़ कानपुर उ.प्र के सिलसिला ए आ़लिया मदारीया की शाख़ गिरोहे दिवानगान मलंगान से वाबस्ता थे।

बलूचिस्तान से भोपाल की तरफ़ हिजरत- 17 वीं सदी ई़स्वी मुग़ल बादशाह आ़लमग़ीर औरंगज़ेब के सबसे बड़े सिपहसालार दोस्त मुहम्मद ख़ान के फ़ौजी दस्ते में हज़रत मिस्कीन शाह मलंग रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के सगे भाई मुहतरम आ़लीजनाब ग़रीब शाह मुग़ल फ़ौजी दस्ते के सरदार थे।मुग़ल फौज़ियो को जब भोपाल फ़तह करने का हुक्म दिया गया तो फ़ौजी हज़रात आ़लीजनाब ग़रीब शाह के साथ मिलकर हज़रत मिस्कीन शाह मलंग रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह से अपने

हमराह हुसूले बरकत के लिए भोपाल चलने की दरख़्वास्त की।हज़रत मिस्कीन शाह मलंग रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ने दरख़्वास्त क़ुबूल कर फ़ौजी दस्ते के हमराह बलूचिस्तान से हिजरत कर भोपाल तशरीफ़ ले आए। इस सफ़र में आपके फ़ूफ़ीज़ाद भाई हज़रत यक़ीन अ़ली शाह दाता मलंग रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ढलगर मुहल्ला मछली मार्केट जबलपुर भी साथ थे।

भोपाल से जबलपुर की तरफ़ हिजरत- मुग़ल फ़ौजी भोपाल जंग के लिए जा निकले वहीं हज़रत मिस्कीन शाह मलंग हज़रत यक़ीन शाह दाता मलंग को साथ लेकर तब्लीग़े दीन व लोगों को राहे सिराते मुस्तक़ीम पर लाने के लिए भोपाल से रवानगी कर बाड़ी बरेली रायसेन होते हुए शहरे जबलपुर तशरीफ़ ले आए। जबलपुर तशरीफ़ आवरी के बाअ़द आपने कोतवाली बाज़ार के पास सुकूनत इख़्तियार की। वहीं हज़रत यक़ीन शाह दाता मलंग ढलगर मुहल्ला मछली मार्केट के पास सुकूनत इख़्तियार की। हज़रत मिस्कीन शाह मलंग की जबलपुर तशरीफ़ लाने की ख़बर सुन हर मज़हबो मिल्लत के लोग क़ुर्बो-ज्वार, दूर दराज़ से मिलने के लिए आने लगे व हज़रत के फ़ैज़ से मुस्तफ़ीज़ होने लगे।

ताअ़मीरी काम- बढ़ती आ़बादी व रिहाईश देखकर हज़रत मिस्कीन शाह मलंग मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला ने कोतवाली बाज़ार में तक़रीबन 1092 हिजरी मुताबिक़ सन् 1681 सदी ईस्वी को आपने अपने बेहद ख़ास अक़ीदतमंद सुखलाल पटवा से मस्जिद ताअ़मीर करवाई। दौरे हाज़िर में मस्जिद को मिस्कीनीया मस्जिद व कोतवाली मस्जिद के नाम से जाना जाता है। इस हिसाब सन् 2022 ईस्वी में मस्जिद को ताअ़मीर हुए 341 साल का अर्सा मुकम्मल हो चुका है। मस्जिद ताअ़मीर होने से क़ब्ल उस जगह को तकिया के नाम से जाना जाता था।

इसके अ़लावा हज़रत मिस्कीन शाह मलंग रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ने ज़िक्रे तबारक व तआ़ला, ई़बादत व रियाज़त के लिए इमामबाड़ा व उसके के बाजू के कमरे में अपने लिए धूनी की बुनियाद रख़ी। मदारी मलंग बुज़ुर्गों का ख़ास कमरा जिसमें मलंग हज़रात ई़बादत किया करते आपने मस्जिद के अहाते में एक कुआं भी ताअ़मीर करवाया। धूनी व कुएं की ख़ास बात यह थी कि जो कोई परेशान ह़ाल फ़रियादी हज़रत मलंग बाबा के पास आता। हज़रत धूनी से राख़ व कुएं का पानी उस परेशान ह़ाल शख़्स को दे देते , धूनी की राख़ व कुएं के पानी की बरक़त से अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से शिफ़ा मिल जाती। यह धूनी वाला कमरा आज भी मौजूद है और मुरजए ख़लाइक़ है। हाल-ए-ज़माना में नमाज़गाह को वसीअ़ करने के लिए कुएं को ढांक दिया गया है, लेकिन उसका पानी आज भी इस्तेअ़माल होता है। मुसाफ़िर हज़रात और दूर दराज़ से आने वाले जा़यरीनों के लिए मस्जिद के क़रीब ही क़याम करने का माकूल इंतजा़म रहता था। मस्जिद के अख़राजात के लिए 1950 ईस्वी के क़रीब आ़ली जनाब फ़क़ीर मुहम्मद शाह साहब ने मस्जिद के बाहर 5 से 6 दुकानों को ताअ़मीर करवाया।

सरदार ग़रीब शाह का जबलपुर की तरफ़ हिजरत - फ़तह़ भोपाल के बाअ़द जब सिपहसालार दोस्त मुहम्मद खान ने हज़रत मिस्कीन शाह मलंग रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह व हज़रत यक़ीन शाह दाता मलंग के बारे में माअ़लूमात की तो उन्हें बताया गया दोनों हज़रत तब्लीग़े दीन के लिए भोपाल से कूच कर गए हैं और उन्हें बाड़ी बरेली रायसेन की तरफ़ से जाते देख़ा गया। यह सुनकर सिपहसालार दोस्त मुहम्मद खान ने सरदार ग़रीब शाह को माले ग़नीमत इरसाल किया और फ़रमाया आप अपने मलंग भाईयों की तालाश में जा निकलें। सरदार ग़रीब शाह अपनी जौ़ज़ा मुहतरमा व हमराह कुछ लोगों को लेकर राहगीरों से तफ़्तीश करते हुए जबलपुर

तशरीफ़ ले आए। दोनों बुज़ुर्गों से मिलकर अपने वतन कोहाट बलूचिस्तान वापस चलने की इल्तिज़ा की। दोनों मलंग हज़रात ने इरशाद फ़रमाया अल्लाह तबारक व तआ़ला ने हमारी आख़री दीनी व दुनियावी मंज़िल यहीं बना दी है, अब हम यहां से नहीं जा सकते और आप भी यही मुक़ाम करें।सरदार ग़रीब शाह ने मलंग भाईयों के साथ जबलपुर में ही रहने का फ़ैसला किया। माले ग़नीमत से जो रक़म मिली थी उससे घोड़ा नक्कास मिलौनीगंज में ज़मीन ख़रीद कर रिहाईशी मकान ताअ़मीर करवाया। इसके बाअ़द आपकी आल औलाद के अफ़राद कोतवाली मस्जिद के पीछे की तरफ़ रिहाईश इख़्तियार की जहां आज भी आपकी आल औलाद शादो आबाद है।

विसाल - हज़रत मिस्कीन शाह मलंग रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह को इस दुनियाए फ़ानी से विसाल किए कमोबेश 300 साल से ज़ाइद का अरसा बीत चुका है। आपकी मज़ारे मुक़द्दस कोतवाली मस्जिद के सहन में मशरिक़ की तरफ़ मौजूद है। वहीं मस्जिद के अंदर बाएं जानिब की तरफ़ एक मज़ार शरीफ़ और है जिन्हें हज़रत दारा शाह रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के नाम से याद किया जाता है। कहा जाता है कि हज़रत दारा शाह भी मुग़ल फ़ौजी दस्ते के सिपाही थे और हज़रत मिस्कीन शाह मलंग के बेहद ख़ास लोगों में शामिल थे, आप भी अपने वतन वापस नहीं गए और यहीं सुकूनत इख़्तियार की।

उर्स शरीफ़ - हज़रत मिस्कीन शाह मलंग रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह का उर्स शरीफ़ हर साल मदारे पाक के उर्स शरीफ़ के महीने में 22 जमादीयुल अव्वल को मुनअ़क़िद होता है, जिसमें आपके अक़ीदतमंद बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते हैं और अपने हिस्से की सआ़दत हा़सिल करते हैं।

हज़रत यक़ीन अ़ली शाह दाता की मज़ार शरीफ़ ढलगर मुहल्ला में जाए मस्कन है। आपके के बाजू में हज़रत गुलाब अ़ली शाह रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह की क़ब्र शरीफ़ वाकए है जो आपके बेहद ख़ास लोगों में शामिल थे। दरगाह शरीफ़ की ज़मीन से लगी हुई ज़मीन एक आ़लीशान मस्जिद ताअ़मीर की गई जिसे यक़ीनीया मस्जिद नाम से जाना जाता है।

उर्स शरीफ़ - आपका उर्स शरीफ़ 27 जमादीयुस सानी शरीफ़ को बहुत बड़े पैमाने पर मुनाक़िद होता है।

ह़वाला -: मुनदर्जा ज़ैल तमाम माअ़लूमात मस्जिद के पुराने दस्तावेज़, आ़लीजनाब डॉ ज़हीर मुहम्मद शाह 'अज्जू' इब्ने शहीद फ़क़ीर मुहम्मद शाह साहब, आ़लीजनाब मिर्ज़ा इफ़्तिख़ार अहमद शाह इब्न मौलाना नज़ीर मुहम्मद शाह साहब से हासिल की गई।

क़ुत्बे वक़्त हज़रत बेला शाह मस्त रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह रानीताल जबलपुर।

हज़रत क़िब्ला सरकार बेला शाह मस्त रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह अंग्रेज़ी हुकूमत के वक़्त हिजरत करके शहरे जबलपुर तशरीफ़ लाए। तशरीफ़ आवरी के बाअ़द आपने कमानिया गेट व कोतवाली बाज़ार में हज़रत मिस्कीन शाह मलंग मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह मज़ार शरीफ़ के क़रीब क़याम किया। वहां से फ़ैज़ हासिल कर जुनूबी मिलौनीगंज सूजी मुहल्ला के क़रीब कुरीयाना मुहल्ला में हज़रत नूर मुहम्मद नज़रिया मुल्ला जी के यहां मुस्तक़िल तौर पर तशरीफ़ ले आए। यहां आने के बाअ़द अ़क़ीदतमंद हज़रात की ताअ़दाद में इज़ाफ़ा होने लगा। आप बहुत ही

बावक़ार मशहूरे ज़मां औलिया अल्लाह में से हैं। आप रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह मुक़ामे क़ुत्बीयत पर फ़ाईज़ थे। हज़रत मदारा शाह रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह जमाअ़ मस्जिद सदर के ख़ानदान से तअ़ल्लुक़ रख़ने वाले आ़लीजनाब सूफ़ी बाबा अ़ब्दुल अज़ीज़ शाह चिश्ती मदारी तकिया मुहल्ला बूचड़ी सदर, आ़ली जनाब मोहतरम नासिर शाह बाबा जमाअ़ मस्जिद सदर व बाबा कलीम शाह अतीक़ी मदारी रहीम शाह तकिया और दीगर हज़रात के क़ौल के मुताबिक़ जो उन्होंने अपने बुज़ुर्गों से पीढ़ी दर पीढ़ी सुनते आए हैं बताते हैं कि हज़रत बेला शाह, हज़रत मदारा शाह, हज़रत बुद्धू शाह, हज़रत गुलज़ार शाह उर्फ़ छोटू शाह, हज़रत चम्पा शाह, हज़रत मुराद अ़ली शाह, चमेली शाह, वग़ैरहुम सब एक ख़ानदान के बुज़ुर्ग हैं व सिलसिला ए आ़लिया मदारीया से वाबस्ता औलिया ए किराम में से हैं।

करामत1 - हज़रत बेला शाह रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह की दादा मियां हज़रत बहादुर अ़ली शाह रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह से मुलाक़ात पीरे कामिल गौ़सुल आ़लम हज़रत ख़्वाजा हाफिज़ सैय्यद बहादुर अ़ली शाह उर्फ़ दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह अपनी ज़ेरे ताअ़मीर ख़ानक़ाहे आ़लिया सुलेमानीया में रहा करते थे। वहीं से तब्लीग़े दीन रुश्दो हिदायत का कारे ख़ैर किया करते। आप रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह को जब हजामत बनवानी होती तो ख़ानक़ाह शरीफ़ के बरामदे में हजामत बनवाते थे। एक बार कुछ यूं हुआ कि आप रहमतुल्लाह अलैह हजामत बनवा रहे थे लेकिन नाई को बार बार रोक देते। इस बात से नाई बहुत परेशान होता लेकिन हज़रत की ताअ़ज़ीमो अदब की बिना पर कुछ बोलने की हिम्मत ना कर पाता। इतने में ही हज़रत ख़्वाजा सरकार हाफ़िज़ सैय्यद बहादुर अ़ली शाह दादा मियां रहमतुल्लाह अलैह ने नाई को हजामत बनाने से फ़िर रोका और ख़ानक़ाह शरीफ़ के चबूतरे में तशरीफ़ फ़रमां हो गए। लोगों ने बड़े ताअ़ज्जुब से

देख़ा कि उस वक़्त के बहुत बड़े बुज़ुर्ग हज़रत सरकार साईं बेला शाह मस्त रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह तशरीफ़ ला रहे हैं। याअ़नी हज़रत सरकार बेला शाह रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के आने का इ़ल्म हज़रत दादा मियां को पहले ही हो गया था, इसलिए आप हज़रत क़िब्ला बेला शाह रहमतुल्लाहि तआ़ला अलैह के इस्तक़बाल के लिए ख़ानक़ाह शरीफ़ की दहलीज़ में पहले ही आ गए और हज़रत बेला शाह के लिए फ़रमाया कि" शेर आ रहा है और शेर के लिए उठना ही पड़ता है।"हज़रत सरकार बेला शाह भी हज़रत दादा मियां सरकार के पास बड़े अदब के साथ हाज़िर हुए और अपनी कैफियत में अपने पांव मुबारक से जूतियां उतार कर कभी हाथ में रख़ लेते तो कभी अपने बगल में दबा लेते और हज़रत दादा मियां से दस्तबोसी कर लम्बी गुफ्तगू करते।

2) एक वाकिया और है कि हज़रत बेला शाह ने अपनी आख़री आरामगाह जहां आपकी मज़ार शरीफ़ है उस जगह का पहले ही इंतेख़ाब कर लिया। लेकिन वोह जगह किसी ग़ैर मुस्लिम ज़ाईफ़ा की थी। हज़रत बेला शाह ने अपने ख़ादिमुल ख़ास हज़रत बाबा नूर शाह अफ़्गानी व हज़रत बाबा नूर मुहम्मद नज़रिया मुल्ला जी को उस ज़ईफ़ा से वोह जगह फ़रोख़्त करने के लिए कहा। वोह ज़ईफ़ा हर बार ज़मीन देने से इंकार कर देती। जैसे तैसे उसने बेमन से ज़मीन को हज़रत नूर शाह अफ़्गानी को कुछ रक़म में बेच दिया। वोह ज़ईफ़ा आधी रात के वक़्त अपनी बेची हूई ज़मीन के पास गई तो देख़ा कि वहां पर बहुत से सफ़ेद लिबास पोश रुहानी बुज़ुर्ग तशरीफ़ फरमां है और अपनी कैफ़ियत में मस्त हैं। यह माज़रा देख़ ज़ईफ़ा बेहद घबरा गई और उसे यक़ीन हो गया कि हज़रत बेला शाह व उनके साथ के तमाम बुज़ुर्ग बहुत पहुंची हुई शख़्सीयत हैं। उसने जो रक़म ज़मीन बेच कर ली थी वापस करने के लिए हज़रत नूर शाह अफ़्गानी के पास आई हज़रत क़िब्ला ने फ़रमाया हम बिना रुपया

दिए कुछ नहीं ख़रीदते यह रक़म आप की ही है इसे आप अपने पास रख़े रहिए लेकिन आइंदा हम बुज़ुर्गों को परेशान मत करना। यह सुनकर ज़ईफ़ा औरत इत्मिनानो सुकून के साथ वहां से रवाना हो गई।

हज़रत हाजी फ़क़ीर नूर ख़ान अफ़ग़ानी की हज़रत बेला शाह से मुलाक़ात- हज़रत क़िब्ला हाजी फ़क़ीर नूर ख़ान अफ़ग़ानी इलाक़ाए गज़नैन अफ़ग़ानिस्तान के रहने वाले थे। तिजारत के लिए आपका मुल्के हिंद आना जाना लगा रहता था। इसी तिजारती सफ़र में आपकी मुलाक़ात हज़रत क़िब्ला बेला शाह रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह से हुई और आप मुलाक़ात के बाअ़द हज़रत बेला शाह के ही होकर रह गए। हर सफ़र में आप हज़रत बेला शाह के साथ रहने लगे व ख़ूब इल्मे ज़ाहिरी व बातिनी हासिल कर मरातिब को तए किया।

हज़रत नूर मुहम्मद नज़रिया मुल्ला जी - हज़रत बेला शाह रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के साथ हज़रत क़िब्ला नूर मुहम्मद नज़रिया मुल्ला जी भी हर वक़्त साथ मे रहते व हज़रत की ख़िदमत में लगे रहते। आपके नाम से आपके मुअ़क़्क़िदीन ने हामिद हसन बाड़ी के पास मस्जिदे नूर अहले सुन्नत ताअ़मीर करवाई। हज़रत बेला शाह व हज़रत नूर शाह अफ़ग़ानी के मज़ार शरीफ़ के बीच में आपकी क़ब्र शरीफ़ बनवाने के लिए जगह छोड़ी गई थी जो किन्हीं वुजूहात की वजह से वहां नहीं बन पाई। और आपकी क़ब्र शरीफ़ रहीम शाह तकिया कब्रिस्तान में वाकए है।

विसाल शरीफ़- हज़रत क़िब्ला बेला शाह रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह का विसाल शरीफ़ 8 दिसंबर 1911 ईस्वी 16 ज़िलहिज बरोज़ जुमआ़ 1329 हिजरी को हुआ व हज़रत क़िब्ला नूर ख़ान अफ़ग़ानी का विसाल शरीफ़ बरोज़ जुमआ़ 23 रमज़ानुल मुबारक 1354 हिजरी मुताबिक़ 20 दिसंबर 1935 ईस्वी को हुआ।

मज़ार शरीफ़ - हज़रत क़िब्ला बेला शाह रहमतुल्लाह अलैह का मजा़रे पुरअनवार रानीताल कब्रिस्तान के पास मौजूद है और आपके अक़ीदतमंदो के लिए मुरजए खलाइक़ है। आपके पास ही आपके चहीते ख़ादिम हज़रत नूर ख़ान अफ़्गानी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह का मज़ार शरीफ़ मौजूद है।

उर्स शरीफ़ - हज़रत बेला शाह का उर्स शरीफ 8 दिसंबर को बड़ी शानो शौक़त के साथ मनाया जाता है। जिसमें ज़ाएरीने उर्स अपने हिस्से का फ़ैज़ हासिल करते हैं। आपके मुअ़क़्क़िदीन दीगर तारीख़ में भी आपकी महफ़िल मुनअ़क़िद करते हैं, और अपने हिस्से की सआ़दत हासिल करते हैं।

ख़ादिम - हज़रत बेला शाह रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह की दरगाह शरीफ़ के ख़ादिम दौरे हाज़िर में हज़रत नूर मुहम्मद नज़रिया मुल्ला जी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के पोते आ़ली जनाब मुहतरम मुहम्मद आज़ाद साहब हैं जो पूरे नेक दिली के साथ दरगाह शरीफ़ की देख़रेख़ करते हैं व ज़ाइरीन हज़रात का इस्तक़बाल करते हैं। आपके पास हज़रत बेला शाह रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के बहुत से तबर्रुक़ात मौजूद हैं जो बमौकए उर्स ज़ाएरीन को ज़ियारत भी करवाए जाते हैं।

नोट – तमाम माअ़लूमात आ़लीजनाब मुहतरम ख़ादिम मुहम्मद आज़ाद साहब की इजाज़त से तहरीर की गई है। अगर कहीं कुछ ग़लती हो तो उसके लिए हम मुआ़फ़ी के तलबग़ार हैं।

हज़रत पहलवान बाबा मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह,

हज़रत जलालुद्दीन मलंग मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह

एस .आई तकिया मुहल्ला बूचड़ी सदर जबलपुर

हज़रत पहलवान बाबा रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह व हज़रत जलालुद्दीन शाह मलंग मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह सिलसिला ए आ़लिया मदारीया के बुज़ुर्गाने किराम में से हैं। आप दोनों बुज़ुर्ग निहायत ही ख़ूबसूरत ऊंचे क़द काठी के थे, पहलवानी किया करते थे।

जबलपुर की तरफ़ हिजरत -: तावील सफ़र तए कर आप दोनों बुज़ुर्गों ने शहरे जबलपुर में क़याम पज़ीरी की व मदारी अंदाज़ में तब्लीग़ का काम शुरूअ़ कर दिया।

मज़ार शरीफ़-: हज़रत पहलवान बाबा और हज़रत जलालुद्दीन मलंग रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम को इस दुनिया ए फ़ानी से कूच किए 150 साल से ज़्यादा का अर्सा गुज़र चुका है।

हज़रत पहलवान बाबा की मज़ार शरीफ़ तकिया मुहल्ला बूचड़ी सदर जबलपुर में ख़ुले मैदान के किनारे की तरफ़ जाए मस्कन है।

हज़रत जलालुद्दीन मलंग की मज़ार शरीफ़ एस .आई तकिया मुहल्ला बूचड़ी सदर जबलपुर के बाड़े के अंदर की तरफ़ जाए मस्कन है।

उर्स शरीफ़-: दोनों बुज़ुर्गों को उर्स शरीफ़ अहले तकिया व क़ुर्बो ज्वार के लोग हर साल चांद की तारीख़ 1 मुहर्रमुल हराम को बड़ी धूमधाम के साथ मुनअ़क़िद करते हैं जिसमें ज़ाएरीने उर्स का तांता लगा रहता है।

नोट–: तमाम माअ़लूमात हज़रत सूफ़ी अ़ब्दुल अज़ीज़ शाह चिश्ती मदारी उर्फ़ अज्जू बाबा साहब व बाबू शाकिर शाह साहब से हासिल की गई।

हज़रत मदारा शाह मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह
जमाअ़ मस्जिद सदर जबलपुर,

हज़रत बुद्धू शाह मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह
शाह नाला कब्रिस्तान सदर जबलपुर

वलिए कामिल हज़रत मदारा शाह मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह अंग्रेज़ों के ज़ुल्मों सितम के ज़माने में जब हालात नाज़ेबा थे अपने अहलो अयाल, व दीगर औलिया अकाबिर, मुअक़्क़िदीन के साथ शहरे जबलपुर तशरीफ़ लाए और सुकूनत इख़्तियार की। आप अपने वक़्त के एक अज़ीम दीनी व दुनियावी समझ रखने वाली शख़्सीयत थे। आपके इ़ल्मो हिक्मत का कोई सानी नहीं था।बुज़ुर्गों से सुनते हुए यह बात चली आ रही है कि हज़रत मदारा शाह रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह मुग़ल बादशाहे हिंद हज़रत सूफ़ी बहादुर शाह ज़फ़र रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के फ़ौजी दस्ते में शामिल थे।अक्सर मुग़ल बादशाह अपने फ़ौजी दस्ते में तब्लीग़े दीन के लिए औलिया अल्लाह को रखा करते थे ताकि फ़ौजियों व दीगर हज़रात को दीनी ताअ़लीमात दी जा सके। हज़रत मदारा शाह भी इन्हीं औलिया अल्लाह में शामिल थे जो सिलसिला ए आ़लिया मदारिया से तअ़ल्लुक़ रखते थे।

ताअ़मीरे जमाअ़ मस्जिद सदर –: हज़रत मदारा शाह मदारी जबलपुर तशरीफ़ आवरी के बाअ़द सदर में अपने ज़ाती मिल्कीयत से रिहाईश के लिए ज़मीन फ़रोख़्त की व उस वक़्त के दीगर बुज़ुर्गों के साथ मिलकर आपने तक़रीबन 1863 ईस्वी में मस्जिद के लिए ज़मीन फ़रोख़्त की और ताअ़मीरी काम शुरूअ़ किया गया जो सन्

1895 में मुकम्मल हुआ। दौरे हाज़िर में मस्जिद को जामाअ़ मस्जिद सदर के नाम से मशहूरीयत हासिल है और यह मस्जिद जबलपुर की निहायत ही ख़ूबसूरत मस्जिदों में से एक है। यह सब आपके दीनी ख़िदमात का मुंह बोलता सुबूत है। इस मस्जिद की ख़ास बात यह है कि ताअ़मीरे मस्जिद में ज़्यादातर सिर्फ़ पत्थरों का इस्तेअ़माल किया गया है। दीवार, सुतून भी पत्थरों को तराश कर बनाए गए। क़दीम गुम्बद भी पत्थरों से ताअ़मीर किया गया था जो शहर में आए एक क़वी ज़लज़ले में शहीद हो गया। उसके बाअ़द नए तरीक़े से गगनचुंबी गुम्बद शरीफ़ ताअ़मीर करवाया गया।

इसके अ़लावा हज़रत बुद्धू शाह मदारी रहमतुल्लाहि तअ़ाला अ़लैह जो रिश्ते में हज़रत मदारा शाह के साहबज़ादे के साहबज़ादे हैं उन्होंने गोरख़पुर जबलपुर में एक अ़ालीशान मस्जिद ताअ़मीर करवाई। हज़रत बुद्धू शाह मदारी भी अपने वक़्त के बड़े औलिया अकाबिर में से थे।

हज़रत मदारा शाह मदारी अपने रिहाईश में रहकर जिसे कुछ वक़्त पहले तक जनाब शहीद शाह तकिया कहा जाता था मस्जिद की देख़-रेख़ व तब्लीग़ का काम किया करते। आपके मुरीदीन व मुतवस्सिलीन आपसे मिलने के लिए आते रहते थे और आपके फ़ैज़ान से मालामाल होते थे।

दौरे हाज़िर में जामाअ़ मस्जिद की देख़-रेख़ मस्जिद कमेटी करती है।

मस्जिद के पास ही हज़रत मदारा शाह की आल औलाद आज भी शादो आबाद है। इसके अ़लावा जबलपुर के दीगर मुक़ामात में भी आपकी आल शादो आबाद है। आपके ख़ानदान में एक से एक बुज़ुर्गों का ज़हूर हुआ। हज़रत बेला शाह मस्त रानीताल, हज़रत यक़ीन अ़ली शाह दाता ढलगर मुहल्ला, हज़रत पहलवान बाबा,

हज़रत जलालुद्दीन शाह मलंग तकिया मुहल्ला बूचड़ी सदर यह सब बुज़ुर्ग आपके ख़ानदान व कुंबे से वाबस्ता बुज़ुर्ग हैं।

अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ बग़ावत - हज़रत मदारा शाह अपने ख़ानदान के दीगर अफ़राद के साथ मिलकर जंगे आज़ादी के अव्वल सूरमा जिन्होंने अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ सबसे पहले बग़ावत की बिगुल फ़ूकी हज़रत शहीद मजनू शाह मलंग मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह मकनपुर शरीफ़ के साथ मिलकर अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ जंगे आज़ादी में बढ़ चढ़ कर शिरक़तदारी की और अपना नाम इतिहास के सुनहरे सफ़्हों में दर्ज करवाया।

मज़ार शरीफ़-: हज़रत मदारा शाह की मज़ार शरीफ़ जमाअ़ मस्जिद सदर के अंदर हौज़ ख़ाना के किनारे वाकए है वहीं हज़रत बुद्धू शाह की मज़ार शरीफ़ शाह नाला कब्रिस्तान में वाकए है। हज़रत मदारा शाह की दरगाह शरीफ़ के पास और भी बुज़ुर्गाने किराम की मज़ारात मौजूद हैं जिनके नाम यह हैं -

हज़रत हाफ़िज़ इमाम साहब रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह - आपने अरसे दराज़ तक मस्जिद में इमामत की और एक पैसा भी नज़राना नहीं लिया।

हज़रत मौलाना मुहम्मद हुसैन व हज़रत मौलाना मुहम्मद अ़ब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम की मज़ार शरीफ़ हौज़ के पास हुजरे के अंदर वाकए हैं।

इसके आ़लावा कुत्बे वक़्त हज़रत आग़ा मुहम्मद शाह रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह आग़ा चौक जबलपुर के उस्तादे मुहतरम हज़रत मौलाना अ़हसानुल हक़ चिश्ती नियाज़ी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह व दीगर मज़ारात मस्जिद के पीछे की तरफ़

मुरजए ख़लाइक़ हैं। पहले यह हिस्से में कब्रिस्तान था जिसमें से सिर्फ़ कुछ मज़ारात दौरे हाज़िर में मौजूद है जिनका ज़िक्र किया जा चुका है।

नोट–: तमाम माअ़लूमात हज़रत मदारा शाह के ख़ानदान के आ़ली जनाब मोहतरम नासिर शाह बाबा साहब व सूफ़ी अ़ब्दुल अज़ीज़ शाह उर्फ़ अज्जू बाबा साहब ने अ़ता की।

बाबा नासिर शाह साहब का ख़ानदानी शिजरा जो हज़रत मदारा शाह से जा मिलता है नासिर शाह बिन वहीद शाह बिन शहीद शाह बिन बुद्धू शाह बिन जमाल शाह बिन मदारा शाह रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम व अजमईन।

हज़रत मलंग शाह बाबा मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह
मुजावर मुहल्ला गढ़ा जबलपुर

सिलसिला ए आ़लिया मदारीया के बहुत अज़ीम वलीयुल्लाह क़ुत्बे वक़्त हज़रत अ़ब्दुल ग़फ़ूर अलमाअ़रूफ़ बाबा कपूर तैफ़ूरी ग्वालियरी मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ग्वालियर मध्यप्रदेश का तब्लीग़े दीने इस्लाम करते हुए तक़रीबन 889 हिजरी को शहरे जबलपुर के मुख़्तलिफ़ मुक़ामात से गुज़र हुआ। आपके क़ाफ़िले में ला'ताअ़दाद मदारी बुज़ुर्ग व मलंगाने किराम रहते। सब मिलकर इबादतो रियाज़त करते शहर के ऊंचे ऊंचे पहाड़ों पर अपनी धूनी जमाते और मख़्लूक़े ख़ुदा को फ़ैज़याब करते। इन्हीं बुज़ुर्गों में हज़रत मलंग शाह बाबा रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह भी थे, जिन्होंने जबलपुर को ही अपना आख़री क़यामगाह बनाया और यहीं गोशा नशीनी इख़्तियार कर शहर को ज़ीनत बख़्शी। तकिया मुजावर

मुहल्ला से आप दर्सो तदरीस का कारे ख़ैर करते, ग़रीब मिस्कीनों की मदद करते दीगर मुआ़मलात सरअंजाम देते। तावील अर्से तक हज़रत बाबा कपूर ग्वालियरी व दीगर बुज़ुर्ग हस्ती शहरे जबलपुर के बहुत सारे मुक़ामात व मंज़िलात का सफ़र तैए करते हुए यहां से रवाना हुए। बाबा कपूर ग्वालियरी मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह की दरगाह शरीफ़ जमाअ़ मस्जिद चौक ग़ौसपुरा ग्वालियर मध्यप्रदेश में मुरजए ख़लाइक़ जहां हर रोज़ ज़ाईरीनों का तांता लगा रहता है।

मज़ार शरीफ़–: हज़रत मलंग शाह बाबा मदारी का मज़ार शरीफ़ तकिया मुजावर मुहल्ला गढ़ा मस्जिद के सामने मुरजए ख़लाइक़ है। आज भी आपके अ़क़ीदतमंद मज़ारे मुक़द्दसा में हाज़िर होते हैं और अपनी मुरादों को पूरा होते हुए पाते हैं। तकिया शरीफ़ में किनारे की तरफ़ एक मज़ार और है जिन्हें हज़रत बंगाली शाह बाबा के नाम से जाना जाता है। इनका तअल्लुक़ भी मदारी सिलसिले से है।वल्लाहू तआ़ला आ़लम।

नोट–: मुनदर्जा ज़ैल तमाम माअ़लूमात किताब दामने करम, माहनामा दम मदार व पीरे तरीक़त हज़रत अल्हाज सूफ़ी ख़लील शाह फारान शिकोही मदारी मद्दे ज़िल्लहु आ़ली से हासिल की गई।

हज़रत कल्लन शाह मदारी, हज़रत सुब्बे शाह मदारी,
हज़रत सैय्यद शाह बाबा मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम,
तकिया मुहल्ला गढ़ा बाज़ार जबलपुर।

इन तीनों बुज़ुर्गाने दीन अ़लैहिम अजमईन का तअ़ल्लुक़ सिलसिला ए आ़लिया मदारीया से है। जो गढ़ा बाज़ार में वाकए बघा तलाब तकीया से तब्लीग़े इस्लाम किया करते।और इन बुज़ुर्गों की मज़ार शरीफ़ यहीं जाए मसकन है । एक क़ौल के मुताबिक़ तकिए में हज़रत कल्लन शाह रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह का मज़ार शरीफ़ नहीं बल्कि चिल्ला शरीफ़ है। वल्लाहू तआ़ला आ़लम इस जगह आज भी इन बुज़ुर्गों की आल औलाद शादो आबाद है।

उर्स शरीफ़ -: हर साल तकीए में रहने वाले हज़रात जो इन्हीं बुज़ुर्गों के ख़ानदान से तअ़ल्लुक़ रख़ते हैं, अंग्रेज़ी तारीख़ 21 सितंबर को हज़रत सुब्बे शाह, हज़रत कल्लन शाह व हज़रत सैय्यद बाबा का उर्स बड़ी शानो-शौक़त से मुनअ़क़िद करते हैं, जिसमें कसीर ताअ़दाद में ज़ाएरीन जमाअ़ होकर अपना ख़िराजे अ़क़ीदत पेश करते हैं।

नोट - तमाम माअ़लूमात हज़रत सूफ़ी ख़लील शाह साहब मद्दिज़िल्लहू आ़ली (मुजावर मुहल्ला) व आ़ली जनाब नाज़िर शाह साहब (तकिया मुहल्ला गढ़ा बाज़ार) से हासिल की गई।

इसके अ़लावा हज़रत साईं क़ासिम शाह, सैय्यद शाह, नाना शाह, गुलबहार शाह मलंग व दीगर जय्यद मदारी बुज़ुर्गों की मज़ारात ख़ास शहरे जबलपुर में वाकए हैं लेकिन उनकी ज़्यादा माअ़लूमात देने से हम क़ासिर हैं।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह शादाब शाह मलंग मदारी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह गोटे गांव जबलपुर

हज़रत शादाब शाह मलंग रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह सिलसिला ए आ़लिया मदारीया की शाख़ दिवानगाने मलंगान के वलीयुल्लाह में से हैं, आपने हिजरत करके अपना जाए मस्कन शहरे जबलपुर के करीब गोटे गांव में बनाया व रुश्दो हिदायत का काम शुरूअ़ किया।

मज़ार शरीफ़- हज़रत अ़ब्दुल्लाह शादाब शाह मलंग रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह की मज़ार देव नगर पुराना गोटे गांव जिला जबलपुर में है। जबलपुर से गोटे गांव की दूरी तक़रीबन 60 किलोमीटर है।आपकी मज़ार शरीफ़ की देख़रेख़ हज़रत सूफ़ी अल्हाज ख़लील शाह फ़ारान शिकोही मदारी मुजावर मुहल्ला गढ़ा जबलपुर करते हैं।

मलंगान की मज़ार पाटन जबलपुर

मलंगान की मज़ार शरीफ़ कोहनी तहसील पाटन जिला जबलपुर में जाए मस्कन है। यहां क़रीब दो मलंग बुज़ुर्ग आराम फ़रमां है जो सिलसिला ए मदारीया से वाबस्ता हैं। जबलपुर शहर से पाटन की दूरी तक़रीबन 50 किलोमीटर है।

हज़रत मलंग शाह बाबा रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह बरेला जबलपुर

हज़रत मलंग शाह बाबा की मज़ार शरीफ़ बी.टी.आई बरेला गांव शहर जबलपुर में जाए मस्कन है। हर साल17 , 18 ज़िलक़दा को आपके उर्स शरीफ़ बड़ी शानो शौक़त के साथ मुनअ़क़िद होता है, जिसमें हर मज़हब व तबक़े के लोग कसीर ताअ़दाद में

इकट्ठा होकर फ़ुयूज़ो बरक़ात से मालामाल होते हैं।इसके अ़लावा एक मलंग बुज़ुर्ग की मज़ार शरीफ़ और रही जिसे गवर्मेंट अमले ने तजाविज़ात व सड़क को वसीअ़ करने के लिए शहीद कर दिया। जबलपुर से बरेला गांव की दूरी तक़रीबन 35 किलोमीटर है।